Chapter- 1

रैदास के पद

STUDY NOTES

MIND MAP

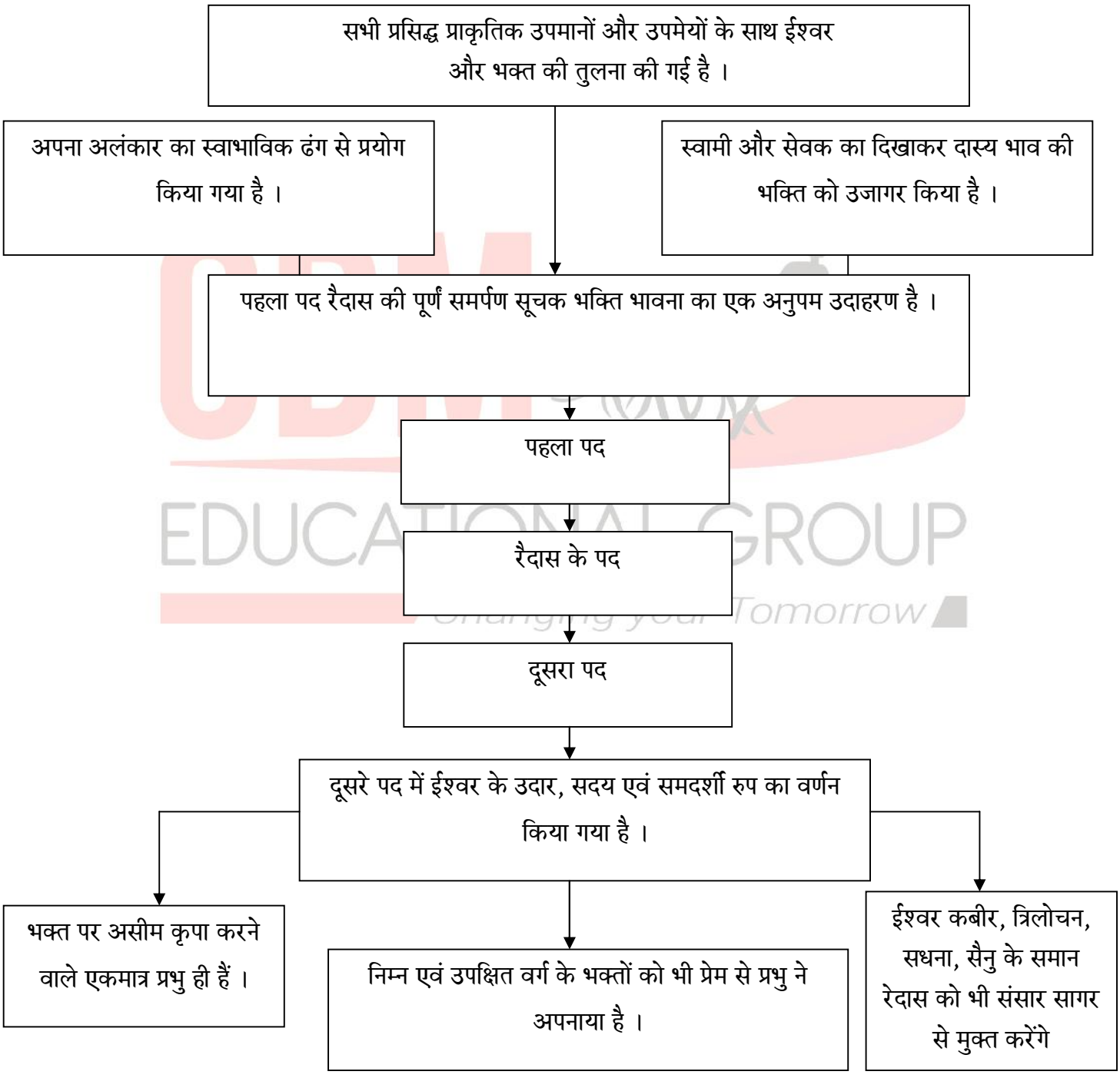

पाठ प्रवेश

रैदास के दो पद है पहले पद में कवि अपने आराध्य को याद करने हुए उनसे अपनी तुलना करते हैं । उनका कहना है कि उनके आराध्य प्रभु किसी मंदिर या मस्जिद में नहीं रहता बल्कि कवि प्रभु संसार के कण-कण में विद्यमान रहता है । यही नहीं, कवि का आराध्य प्रभु हर हाल में, हर काल में उससे श्रेष्ठ और सर्वगुण संपन्न है । इसीलिए तो कवि को उन जैसा बनने की प्रेरणा मिलती है ।

दूसरे पद में भगवाद की अपार उदारता, कृपा और उनके समदर्शी स्वभाव का वर्णन है । कवि कहते हैं भगवान ने कभी किसी के लिए भेद-भाव नहीं किया । भगवान को गरीबों और दीन-दु:खियों पर दया करने वाला कहा है । रैदास ने अपने स्वामी को गुसईया (गोसाई) और गरीब निवाजु (गरीबों का उद्धार करने वाला)

पाठ का सार

पाठ में रैदास के दो पद लिए गए हैं –

१. पहले पद में कवि ने भक्त की उस अवस्था का वर्णन किया है जब भगवान की भक्ति का रंग भक्त पर चढ़ जाता है तो भक्त को भगवान की भक्ति से दूर करना असंभव हो जाता है । कवि कहते हैं –

प्रभु - चंदन है तो भक्त-पानी

-जिस प्रकार चंदन की सुगंध पानी के बूंद – बूँढ़ में समाजाती है उसी प्रकार प्रभु की भक्ति भक्त के अंग अंग में समाजाती है । उसी प्रकार यदि प्रभु बादल है तो भक्त मोर के समान है जो बादल को देखते ही नाचने लगता है । यदि प्रभु चाँद है तो भक्त उस चकोर पक्षी की तरह है जो बिना अपनी पलक झपकाए चाँद को देखता रहता है । यदि प्रभु दीपक है तो भक्त उसकी बची की तरह है जो दिन-रात रोशनी देती रहती है । कवि भगवान से कहते हैं कि हे प्रभु यदि तुम मोती हो तो तुम्हारा भक्त उस धागे के समान है जिसमें मोतियों को पिरोई जाती है तो उस माला (हार) का मुल्य बढ़ जाता है । यदि प्रभु स्वामी हैं तो कवि दासया नौकर है ।

२. दूसरे पद कवि भगवान की महिमा का बरवान कर रहे हैं । कवि अपने आराध्य को ही अपना सबकुछ मानते हैं । कवि भगवान की महिमा का बरवान करते हुए कहते हैं कि –

- भगवान गरीबों और दिन-दु:खियों पर दया करने वाले हैं, उनके माथे पर सजा हुआ मुकुट उनकी शोभा को बढ़ा रहा है । कवि कहते है कि भगवान में इतनी शक्ति है कि वे कुछ भी कर सकते हैं और उनके बिना कुछ भी संभव नहीं है । भगवान के ु ग्ने से अछूत मनुष्यों का भी कल्याण हो जाता है क्योंकि भगवान अपने प्रताप से किसी नीच जाति के मनुष्य को भी ऊँचा बना सकते हैं । उदाहरण – भगवान ने नामदेव, कबीर, त्रिलोचन, सधना और सेनु जैसे संतो का उद्धार किया था । कवि कहते हैं कि हे! शज्जन व्यक्तियों तुम सब सुनो उस हरि के द्वारा इस संसार में सब कुछ संभव है ।

◆◆◆

ODM EDUCATIONAL GROUP Changing your Tomorrow